ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 277-278

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

स्थानीयता में निहित वैश्विकताः भारती खेर

1. कु0 पूजा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-17.12.2023, Revised-23.12.2023, Accepted-28.12.2023 E-mail: contactmail.pooja@gmail.com

सारांशः *कला के कहीं आयाम होते हैं और हर आयाम में अलग ही खूबसूरती निहित होती है। चित्रकला भी एक ऐसी विधा है भारतीय समकालीन कलाकारों में महिला कलाकारों ने अपनी अलग पहचान ही नहीं बनाई बल्कि भारतीय कला को एक दिशा भी दी है। भारती खेर भी इस पीढ़ी की एक प्रतिनिधि कलाकार है। भारती ने यह भी प्रमाणित किया है कि एक कलाकार अपने काम का केंद्र भारत और उसकी आत्मा को रखते हुए भी समकालीन स्थानिक और वैश्विक हो सकता है। लंदन में 1969 में एक जन्मी भारतीय मूल की भारतीय खेर 1990 के दशक में भारत आई और यही उन्होंने अपनी कला साधना शुरू की यही उनकी आज के चर्चित कलाकार सुबोध गुप्ता से मुलाकात हुई जिनके साथ उन्होंने विवाह किया भारती के पास एक तरफ पश्चिमी समाज और कला के अनुभव है तो दूसरी तरफ एक भारतीय मां भी उनमें उन्होंने ज्यादातर पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को घरों की समकालीन आंतरिक सज्जा के साथ पैंट किया था कुछ में उन्होंने पुरातन भारतीयता के साथ पाश्चात्य मूल्यों को एक रस करके बनाया परंतु आज उनकी पहचान वह बिंदी है जो भारतीय स्त्री की सुंदरता का प्रतिमान है। बिंदी एक आध्यात्मिक तीसरी आंख के प्रतिनिधित्व के रूप में माथे के केंद्र पर गू एक बिंदु है बिंदी को वह तीसरी आंखे कहती है।*

अपने मूर्तिकला कार्यों के लिए अत्यधिक सम्मानित, खेर ने ऐसी पेंटिंग और स्थापनाएं भी बनाई हैं, जो भारत में सांस्कृतिक और सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती देती हैं। अनटाइटल्ड बहुस्तरीय और बहुरंगी बिंदियों से बना है। रंगीन फेल्ट के ये असंख्य वृत्त चित्रित बोर्ड पर केंद्रित हैं। उनके काम में एक बार–बार दोहराया जाने वाला रूपांकन, भारतीय ध्वज के केंद्र में जड़े चक्र की तरह, बिंदी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के केंद्र में है और इसे वैवाहिक महिला और समाज में उसके स्थान के संकेत के रूप में देखा जा सकता है। बिंदी पारंपरिक रूप से आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया को जोड़ने वाली तीसरी आंख का भी प्रतिनिधित्व करती है। हाल के दिनों में, इसे एक फैशन सहायक के रूप में सुधार किया गया है, जो विभिन्न रंगों और आकारों में उपलब्ध है। इस काम के साथ, कलाकार सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का संकेत दे रहा है और परंपरा में फंसी महिलाओं की भूमिका को चुनौती दे रहा है, साथ ही फैशन सहायक के रूप में बिंदी के कमोडिटीकरण पर भी टिप्पणी कर रहा है।

कुंजीभूत शब्द– आयाम, चित्रकला, भारतीय समकालीन कलाकारों, प्रतिनिधि कलाकार, प्रमाणित, चर्चित, पितृसत्तात्मक समाज।

बिंदी का उनके रचना संसार में आना भी आकस्मिक ही रहा है। उन्होंने एक स्त्री को बाजार में देखा जिसने बिंदी लगा रखी थी उसे देखने के बाद उन्होंने ढेरो बिंदिया खरीदी और उन्हें अपनी स्केच बुक में चिपका दिया। धीरे–धीरे यह साधारण सी बिंदी उनके कैनवस और शिल्प में समाहित हो गई और उनकी पहचान बन गयी। शिल्पो के अलावा इंटरनेशनल में भी ख्याति प्राप्त की है जैसे एक इंस्टॉलेशन में उन्होंने अक्सर शादी के लिए लड़की देखने की प्रक्रिया में जो मेहमानों को चाय पिलाने कीरवायत है। एकदम अलग अंदाज में पेश किया था जिसमें उन्होंने टेब, टूटे चाय के कप, नकली दांत आदि का प्रयोग किया था जो एक तरह की लड़की देखने की रूढ़िवादिता पर व्यंग भी कहा जा सकता है। घरेलू सामान का भारती ने अपने अनेक इंस्टॉलेशन में बहु आर्थिक प्रयोग किया है ऐसे ही एक इंस्टॉलेशन "इन योर अब्सेंस" में उन्होंने पांच कुर्सियों पर रेजिन चढ़े कंबल साड़ी और कपड़ों को रखकर जो माहौल रचा वह अनुपस्थिति में उपस्थित की अवधारणा को साकार करता है। घरेलू और निजी इस्तेमाल की चीज कुर्सी, चूड़ियां, चाय प्याले आदि अक्सर उनके काम में साधारण के असाधारण को प्रकट करते हैं।

बिंदी– त्वचा अपनी नहीं एक भाषा बोलती है (2006) पेंटिंग और मूर्तिकला के कार्यों में बिंदी के विशिष्ट उपयोग के लिए खेर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। संस्कृत शब्द बिंदु से व्युत्पन्न – जिसका अर्थ है, बिंदु, बूंद, बिंदु या छोटा कण और अनुष्ठान और दार्शनिक परंपराओं में निहित, बिंदी आध्यात्मिक तीसरी आंख के प्रतिनिधित्व के रूप में माथे के केंद्र पर लगाया जाने वाला एक बिंदु है। मूल रूप से प्राकृतिक रंगद्रव्य के साथ लगाई जाने वाली बिंदी समय के साथ एक लोकप्रिय, बड़े पैमाने पर उत्पादित सहायक वस्तु बन गई है। खेर ने अत्यधिक स्तरित और भव्य 'पेंटिंग' बनाकर देखने के इस तरीके को पुनः प्राप्त किया है, जो बिंदी के वैचारिक और दृश्य लिंक जैसे कि दोहराव, पवित्र और अनुष्ठान, विनियोग और स्त्री के एक जानबूझकर संकेत जैसे विचारों से जुड़ा हुआ है। बिंदी एक भाषा या कोड बन जाती है, जिसे हम उन कार्यों के माध्यम से पढ़ना शुरू करते हैं, जो पश्चिमी और भारतीय कला की परंपराओं के साथ औपचारिक संबंध स्थापित करते हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

उनके द्वारा किए गए कार्य और विषय– उन्होंने इकहरे रंग के अलावा कैनवास पर बहुरंगी बिंदिया भी रचना के साथ नए दौर के फैशन और भारतीय परंपराओं को व्यक्त करती है। पेंटिंग के अलावा उन्होंने पशुओं, मीडिया में प्रिंटिंग, मूर्तियां इंस्टॉलेशन औ रटेक्स्ट बनाने का काम किया है। खैर की प्राथमिक सामग्री भारतीय बिंदी के निर्माता संस्करण है।

द स्किन स्पीक्स ए लैंग्वेज नॉट इट्स ओन (2006)– उनके सबसे प्रसिद्ध और चर्चित कार्यों में से एक है। यह एक मूर्ति है, जो फाइबरग्लास से बनी एक आदमकद मादा हाथी का प्रतिनिधित्व करती है और कई बिंदियों से सजी हुई है। यह मूर्ति भारतीय परंपरा के दो सबसे आम प्रतीकों (बिंदी) और हिंदू धर्म (हाथी) को जोड़ती है। इस मूर्ति को भारत के आदर्श के रूप में देखा जा सकता है।

संतुलन– पवित्र ज्यामिति और प्राचीन गणित से प्रेरित होकर खेर का अभ्यास कई बलों के संतुलन को खोजने में व्यस्त है। वह संतुलन के प्रश्न में और तत्वों के एक वास्तविक संयोजन को एक साथ रखकर स्थिर स्थिति प्राप्त करने में रुचि रखती हैं। पाई गई वस्तुओं से खींची गई ये रचनाएं अजीब और तांत्रिक विषय रूप है। सभी को एक साथ नाजुक, लेकिन अनिश्चित क्षण में एक साथ रखा गया है।

समकालीन परिदृश्य– पिछले दिनों "एब्सलूट वोडका" नाम की कंपनी में भारती और सुबोध गुप्ता को अपनी बोतल का इंस्टालेशन करने का अवसर दिया। वह पहले भारतीय कलाकार हैं, जिन्हें यह काम दिया गया इससे पहले एंडी बरहल सहित कई नामी पश्चिम कलाकार इस कंपनी के आमंत्रण पर अपने माध्यमों में काम कर चुके हैं। इनमें यहां सुबोध गुप्ता ने अपनी परिचित शैली में वोडका की बोतल में भारतीय बर्तनों को रचा वहीं भारतीय खेर ने उसमें भी भारतीय भिंडी का प्रयोग किया। इस शिल्प को भारती ने नाम दिया "एब्सलूट खेर"। भारती खेर ने फोटोग्राफी और डिजिटल माध्यम में भी काफी काम किया है।

निष्कर्ष– भारती खेर एक ऐसी कलाकार हैं, जो अपने कला अभ्यास के माध्यम से सांस्कृतिक गलतफहमियों और सामाजिक कोडों की खोज करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अपनी संस्कृति की जांच करने वाले नेक इरादे वाले नृवंशविज्ञानी से अपनी तुलना करते हुए, खेर आधुनिक भारत की एक बहुत ही सशक्त पुनर्व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। हंग्री डॉग्स ईट डर्टी पुडिंग में, एक घरेलू हूवर भड़कीले जानवरों की खाल से ढका होता है। ये उस तरह की आविष्कारशील मिश्रित रचनाएँ हैं, जिन्हें भारती खेर ने अपना बनाया है। स्विस कलाकार मेरेट ओपेनहेम के शुरुआती काम का उदाहरण देते हुए, जिन्होंने चाय के कप, तश्तरी और चम्मच को फर से ढक दिया था, खेर की मूर्तिकला कृतियाँ अपने निर्माण में अविश्वसनीय रूप से असली दिखाई देती हैं।

कलाकार अपनी कला में मौलिकता और भारतीयता की आवश्यकता अनुभव करने लगे। फलस्वरूप आज भारत की चित्रकला जहां आधुनिकता में किसी देश से पीछे नहीं है वहां वह मौलिकता और भारतीयता में भी किसी से काम नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारती खेर ने एक विलक्षण कला शैली में नए आयाम दिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्रा, डॉ अवधेश : कला दीर्घायु (दृश्य कला की अंतर्देशीय पत्रिका)।
2. त्रिवेदी, प्रशांत : भारतीय स्तंभ कलाकार।
3. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Bharti_Kher
4. https://www.manojkiawaaz.com

*****